जैन स्तोत्र रत्नमाळा.

(जेनी अंदर नवस्मरण उपरांत
वीजा छ स्तोत्रो छे.)

छपावी प्रसिद्ध करनार
कोठारी कसलचंद नीमजी.



अमदावादमां
राजनगर प्रिन्टींग प्रेसमां छापी.

वीर संवत २४३३ संवत १९६३

मूल्य चार आना.

अनुक्रमणिका.

जैनस्तोत्र संग्रह.

॥ अथ श्री नव स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथम नवकार ॥

॥ नमो अरिहंताणं, नमो सि-
द्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उव-
ज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, ए-
सो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणा-
सणो ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं
हवइमंगलं॥इति प्रथम स्मरणं॥१

॥ अथ उवसग्गहरं द्वितीय स्मरणं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदा-

मि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहर विस-
निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥
१ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ
जो सया मणुउ ॥ तस्स गह रोग
मारी, दुठ जरा जंति उवसामं ॥ २
॥ चिठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि
बहुफलो होइ ॥ नर तिरिएसु वि
जीवा, पावंति न दुख्क दोगच्चं (दो-
हग्गं) ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे,
चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥ पा-
वंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं
ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ म हायस,
भत्तिब्भर निब्भरेणं हिअएण ॥ ता दे-

व दिज्ज बोहिं, नवे नवे पास जि-
णचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ २ ॥



॥ अथ संतिकरस्तोत्रम् तृतीयं स्मरणं ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगस-
रणं जयसिरीइ दायारं ॥ समरामि
भत्त पालग, निव्वाणी गरुड कय से-
वं ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि,
पत्ताणं संति सामि पायाणं ॥ झ्रौ
स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरिअ हर-
णाणं ॥ २ ॥ ॐ संति नमुक्कारो, खे
लोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ॥ सौँ ह्रीँ
नमो सव्वोसहि, पत्ताणं च देइ सिरिं

॥ ३ ॥ वाणी तिहुअणसामिणि सि
रि देवी जरकराय गणि पिमगा ॥
गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रक्कं
तु जिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्कंतु मम रो
हिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखलाय सया
॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता का-
लि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गं
धारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा
॥ अछुत्ता माणसिया, महामाणसि
या उ देवीउ ॥ ६ ॥ जरका गोमुह
महजरक, तिमुह जरकेस तुंवरू कु-
सुमो ॥ मायंगो विजयाजिय, वंभो
मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ उम्मुह

पयाल किन्नर. गरुमो गंधव्व तहय जरिकंदो ॥ कूबेर वरुणो जिनमी, गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥ देवीउ चक्केसरि, अजिया दुरिआरि कालि महाकाली ॥ अच्चुअ संता जाला, सुतारया सोय सिरिवछा ॥ ए ॥ चंमा विजयंकुसि प, न्नइति निवाणि अच्चुआ धरणी ॥ वइरुट्ट छुत गंधारि, अंब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तिछ रस्कणरया, अन्नेवि सुरासुरी चजहावि ॥ वंतर जोइणि पमुहा, कुणंतु रस्कं सया अम्हं ॥ ११ ॥ एवं सुदिठि सुरगण, सहिउ संघ-

स्स संति जिणचंदो ॥ मज्झवि करेउ रक्कं, मुणिसुंदरसूरि थुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ संति नाह सम्म, द्दिठि रक्कं सरइ तिकालं जो ॥ सवोवद्दव रहिउ, स लहइसुह संपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगह्छ गयण दिणयर, जुग वर सिरि सोमसुंदर गुरूणं ॥ सुप-साय लद्ध गणहर, विज्ञा सिद्धिं भ-णइ सीसो ॥ १४ ॥

इति श्री तृतीय स्मरणं ॥ ३ ॥



॥ अथ तिजयपहुत्त चतुर्थ स्मरणं ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासय, अठ

महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ समय क्खि-
त्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं
॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पन-
रस पन्नास जिणवर समूहो ॥ ना-
सेउ सयल दुरिअं, भविआणं भ-
त्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला
विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥
गह भूअ रक्ख साइणि, घोरुवसग्गं
पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसा
विय, सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥
वाहि जल जलण हरि करि, चोरा-
रि महा भयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना
य दसेव य, पन्नठी तहय चेव चा

लीसा ॥ रक्खंतु मे सरीरं देवा सुर
पणमिया सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः
सरसुंसः, हरहुंहः तह चेव सरसुं
सः ॥ आलिहियनाम गप्नं, चक्कं
किरसवउन्नहं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी
पन्नती, वज्जसिंखला तहय वज्जं कु
सिया ॥ चक्केसरि नरदत्ता, कालि
महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गंधारी
महजाला, माणवि वइरुट्ट तहय
अहुत्ता ॥ माणसि महामाणसिया,
विद्यादेवीउ रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस
कम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणा
णसयं ॥ विविह रयणाइवन्नो, वसो

हिअं हरउ डुरिआइं ॥९॥ चउतीस अइसय जुआ, अठमहापाडिहेर कय सोहा ॥ तिझयरा गयमोहा, झाए अवा पयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं, सवामर पूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥११॥ ॐ जवणवइ वाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ जे केवि डुठ देवा, ते सवे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअंपीअं । एगंतराइ गह जूअ साइणि मुग्गं पणासेई ॥

१३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं डुवारि पडिलिहिअं ॥ डुरिआरि विजयवंतं, निप्भंतं निच्च मच्चेह॥१४॥



॥ अथ नमिऊण पंचमं स्मरणं ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणिणो ॥ चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुठमहा रोगानल, फुलिंग निद्दड्ड सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणाराहण, सलिलंजलि सेय वुड्ढिय छा

या ॥ (उब्बाहा) वण दवदड्ढा गिरि
पा, यव ह्व पत्तापुणो लर्ही ॥ ३ ॥
डुव्वाय खुभिय जल निहि, उब्भड
कल्लोल भीसणारावे ॥ संभंत भय
विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥
४ ॥ अवि दलिअजाणवत्ता, खणेण
पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पासजिण च
लण जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति
नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धुअवणदव,
जाला वलिमिलियसयलदुमगहणे ॥
डज्झंत मुद्धमयवहु, भीसणरव भी
सणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो क
मजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहु अ-

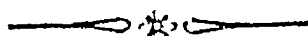
णाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्ग भुअंग नवजल, य सहहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीड सरिसं, दूर परिच्छुद्धविसम विसवेगा ॥ तुह नामरकर फुडसि, द्धमंतगुरुआ नरालोए ॥ ए ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद सदूल सहभीमासु ॥ भयविहुर वुन्न कायर, उल्लूरिअ पहिअ सब्बासु ॥ १० ॥ अविलुत्त विहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त

वावारा ॥ ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता
हिय इच्छियं गाएां ॥ ११ ॥ पज्जलि
आनल नयणं, डुर वियारिय मुहं
महाकायं ॥ नहकुलिसघाय विअ
लिअ, गइंद कुंजलतान्नोयं ॥ १२ ॥
पणयससंन्नमपछ्छिव, नहमणि मा
णिक्क पमिअ पमिमस्स ॥ तुह वय
णपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणं-
ति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंत मुसलं,
दीहकरुल्लाल वढ्ढि उच्छाहं ॥ महु
पिंग नयणजुअलं, ससलिल नवज
लहरारावं ॥ १४ ॥ न्नीमं महाग-
इंदं, अच्चासन्नंपि ते न विगणंति

जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कवंधे ॥ कुंतविणि भिन्न करि कल ह, मुक्क सिक्कार पउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धररिउ, नरिंद निवहा-भडा जसं धवलं ॥ पावंति पावप-समिण, पास जिण तुह प्पभा वेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण भयाई ॥ पासजिण नाम संकि त्तणेण पसमं ति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा भय-हरं, पास जिणिंदस्स संथवमुआरं

॥ नविय जणाणंदयरं, कल्लाण परं पर निहाणं ॥१ए॥ राय नय जरक रस्कस, कुसुमिण डुस्सजण रिस्क पीमासु ॥ संऊासु दो सुपंथे, उव-सग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासो पावं पसमे ज, सयल नुवण च्चिअ चलणो ॥ ॥ २१ ॥ उवसग्गंते कमठा, सुरम्मि ऊाणाज जो न संचलिउ ॥ सुर नर किन्नरजुवइहिं, संथुउ जयनपास-जिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मश्नयारे, अठारस अरकरेहिं जो मंतो ॥ जो

जाणइ सो झायइ, परम पयह्लं फुडं पासं ॥ १३ ॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हिअएण ॥ अठुत्तर सय वाहि भय, नासइ तस्स दूरेण ॥ १४ ॥ इति श्री महाभयहरनामकं पंचमं स्मरणं ॥ ५ ॥



॥अथ श्रीअजितशांति स्तवम् षष्ठम्स्मरणं॥

॥ अजिअं जिअ सव्व भयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणि वयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल भावे, तेहं विउल तव निम्म

ल सहावे ॥ निरुवम महप्पभावे,
थोसामि सुदिठ सब्भावे ॥ २ ॥
गाहा ॥ सव्व दुक्ख प्पसंतीणं, सव्व
पाव प्पसंतीणं ॥ सया अजिय सं
तीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥
सिलोगो ॥ अजिअ जिण सुहप्पव
त्तणं, तव पुरिसुत्तम नाम कित्तणं,
॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं तवय
जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ माग
हिया ॥ किरिआ विहि संचिअ क-
म्म किलेस विमुक्खयरं, अजिअं नि
चिअं च गुणेहिं महा मुणि सिद्धि
गयं ॥ अजिअस्स य संत्ति महामु-

णिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुक्ख वारणं, जइ अविमग्गह सुक्ख कारणं ॥ अजिअं संतिंच भावओ, अभ- अकरे सरणं पवज्जाहा ॥ ६ ॥ माग हिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहि- अ, मुवरय जर मरणं ॥ सुर अ- सुर गरुल भुअग वइ, पयय पणि वइअं ॥ अजिअ महमविअ, सु नय नय निउण मभयकरं, स रण मुवसरिअ भुवि दिविज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ सगं-

थयं ॥ तं च जिणुतम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दवखंति विमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिकरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥८॥ सोवाणयं ॥ सावत्थि पुव्व पत्थिवं च वर हत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिन्न संथियं ॥ थिर सरिच्छ वच्छं मयगल लीलाय माण वर गंधहत्थि पत्थाण पत्थियं संथ वारिहं ॥ हत्थि हत्थ वाहु धंत कणग रुअग निरुवहय पिंजरं, पवर लरकणो वचिय सोम चारुरूवं सुइ सुह मणाभिराम परम रमणिज्ज

वर देव डुंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ए ॥ वेढ्ठ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सब्ब नयं नवोहरिउं ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे नयवं ॥ १० ॥ रासालु-द्धउ ॥ युग्मं ॥ कुरु जण वय हत्थि-णाउर, नरीसरो पढमं तउ महा चक्कवट्टि नोए महप्पनावो ॥ जो बावत्तरि पुरवर सहस्स वर नगर निगम जणवय वइ, बत्तीसा राय वर सहसाणुयाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदरवइ,

चुलसी हय गय रहसय सहस्स सा
मी, छन्नवइ गाम कोमि सामी आ
सिओ नारहम्मि नयवं ॥ ११ ॥ वे
ढओ ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिणं सव
नया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं
वेहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥ यु-
ग्मं ॥ इरकाग विदेह नरीसर, नर व
सहा मुणि वसहा ॥ नव सारय स
सि सकलाणण विगय तम विहुअ
रया ॥ अजि उत्तम तेअ गुणेहिं, म
हा मुणि अमिअ बला विउल कुला
॥ पणमामि ते नव नय मूरण,
जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥

चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूर वंद हठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रूप्प पट्ट सेय सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंत पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअ वंद धेअ सव्व लोअ भाविअ प्पभावणेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमल ससि कलाइ रे अ सोमं, वितिमर सूर कराइरेअ तेअं॥ तिअसवइ गणाइरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेअ सया अजिअं, सारी रे अ बले अजिअं ॥ तव संजमे

अ अजिअं, एस थुणामि जिणे अजिअं ॥ १६ ॥ नुअगपरिरंगिअं ॥ सोम गुणेंहिं पावइ न तं, नव सरय ससी॥ तेअ गुणेहिं पावइ न तं, नव सरय रवि ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं, तिअसगणवइ ॥ सारगुणेहिं पावइ न तं, धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअय ॥ तिच्छवर पवत्तयं तम रय रहियं धीर जण थुअ च्चिअं चूअ कलि कलुसं ॥ संति सुह पवत्तयं तिगरण पयओ संति महं महामुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणय सिरि रइ

अंजलि रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ थुय म हिअच्चिअं वहुसो ॥ अइरुग्गय सरय दिवायर समहिअ सप्पभं तवसा ॥ गयणंगण वियरण समुइअ चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय-माला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरगणमंसिअं ॥ देवकोडि सय संथुअं समणसंघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं अरुयं अजियं अजिअं पयत्र पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसियं ॥ आगया वरविमाण, दिव्व कणग रह

त्तुरय पहकर सएहिं हुलियं ॥ ससं
न्नमो अरण, रकुन्निअ लुलिअचल
कुंमलं गय तिरोम सोहंत मउलि
माला ॥ २२ ॥ वेढ्ढउ ॥ जंसुरसंघा
सासुरसंघा, वेर विउत्ता न्नत्ति सुजु
त्ता ॥ आयर न्नूसिय संन्नमपिंमिय,
सुठु सुविह्मिय सव वलोघा ॥ उत्तम
कंचण रयण परूविय, न्नासुर न्नस
ण न्नासुरिअंगा ॥ गाय समोणय
न्नत्ति वसागय, पंजलि पेसिय सी-
स पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥
वंदिउण थोउण तो जिणं तिगुण
मेवय पुणो पयाहिणं ॥ पणमि

ऋणाय जिणं सुरासुरा, पमुह आ
सन्नवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खि-
त्तयं ॥ तं महामुणि महंपि पंज-
ली, राग दोस भय मोह वज्जियं
॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं संति
मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खि
त्तयं ॥ अंबरंतर विआरणि आहिं,
ललिय हंस वहु गामिणिआहिं ॥
पीण सोणि थण सालिणिआहिं, स
कल कमलदललोअणि आहिं ॥ २६
॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणभर
विणमिय गायलआहिं ॥ मणि कंच
ण पसिढिल मेहल सोहिय सोणि

तम्हाहिं ॥ वरखिंखिणि नेउर स
तिलय वलय विभूसणिआहिं ॥ रइ
कर चउर मणोहर सुंदर दंसणि
आहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देव
सुंदरीहिं पाय वंदियाहिं वंदिया य
जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो
निडालएहिं मंडणोड्डणपगारएहिं
केहिं केहिं वि अवंग तिलय पत्तलेह
नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं
भत्ति संनिविठ्ठ वंदणागयाहिं हुंति
ते वंदिया पुणो पुणो ॥ २८ ॥ ना-
रायउ ॥ तमहं जिणचंदं अजिअं
जिअ मोहं ॥ धुय सव्व किलेसं,

पयत्त पणमामि ॥ २ए ॥ नंदिअयं ॥ शुअ वंदिअयस्सारिसि गणदेव गणेहिं, तो देव वहुहिं पयत्त पण मिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासण अस्सा, नत्ति वसागय पिंमिअ याहिं ॥ देव वरछरसा वहुआहिं, सुरवररइ गुण पंमियआहिं ॥ ३० ॥ नासुर यं ॥ वंस सद्द तंतिताल मेलिए ति उक्कराभिराम सद्द मीसए कएअ, सुइ समाणणे अ सुद्ध सज्ज गीअ पायजाल घंटिआहिं ॥ वलय मेह ला कलाव नेउराभिराम सद्दमीसए कए अ देव नट्टिआहिं हाव भाव

विब्भम प्पगारएहिं ॥ नच्चिनएा अंग
हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुवि
क्कमा कमा तयं तिलोय सव्व सत्त
संति कारयं ॥ पसंत सव्व पाव दो
समेस हं नमामि संति मुत्तमं जि
णं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्त चामर
पडाग जूव जव मंडिआ झय वर
मगर तुरय सिरिवछ सुलंछणा ॥
दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिया
सच्छिअ वसह सीहरह चक्क वरंकि
या ॥ पाठांतर ॥ सिरिवछ सुलंछ
णा ॥ ३२ ॥ ललिययं ॥ सहाव
लठा सम प्पइठा, अदोस दुठा गु-

सेहिं जिठा ॥ पसायसिठाए तवे
पुठा, सिरीहिं ऽठा रिसीहिं जुठा
॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण
धुय सव्व पावया, सव्वलोअहिय
मूल पावया, ॥ संथुया अजिअ
संति पावया, हुंतु मे सिव सुहाण
दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥
एवं तव बल विनलं, थुअं मए
अजिअ संति जिण जुअलं ॥ व-
वगय कम्मरयमलं, गइं गयं सा
सयं विनलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं
बहु गुण प्प सायं, मुरक सुहेण
परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे वि

सायं कुणउ अ परिस्सावी अ प- सायं ॥ २६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउ अ नंदिसेण मभि नंदिं ॥ परिसावि य सुह नंदिं, ममय दिसउ संजमे नंदिं ॥ २७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, सं- वछरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सो अव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ २८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ जोअ निसुणइ, उभउ कालंपि अ- जिअ संति थयं ॥ नहु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ २९ ॥ गाहा ॥ जइ इछह परम पयं, अ-

सेहिं जिण ॥ पसायसिणाण तवे
पुणा, सिरीहिं इण रिसीहिं जुण
॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण
धुय सव्व पावया, सव्वलोअहिय
मूल पावया, ॥ संथुया अजिअ
संति पावया, हुंतु मे सिव सुहाण
दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥
एवं तव बल विउलं, थुअं मए
अजिअ संति जिण जुअलं ॥ व-
वगय कम्मरयमलं, गइ गयं सा
सयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं
बहु गुण प्प सायं, मुरक सुहेण
परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे वि

सायं कुणउ अ परिसावी अ प-
सायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ
अनंदिं, पावेउ अ नंदिसेण मज्ज
नंदिं ॥ परिसावि य सुह नंदिं,
मम्मय दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥
गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, सं-
वच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सो
अव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो
एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ
जोअ निसुणइ, उभउ कालंपि अ-
जिअ संति थयं ॥ नहु हुंति तस्स
रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥
गाहा ॥ जइ इच्छह परम पयं, अ-

सेहिं जिठा ॥ पसायसिठाण तवें
पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा
॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण
धुय सव्व पावया, सव्वलोअहिय
मूल पावया, ॥ संथुया अजिअ
संति पावया, हुंतु मे सिव सुहाण
दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥
एवं तव बल विउलं, थुअं मए
अजिअ संति जिण जुअलं ॥ व-
वगय कम्मरयमलं, गइं गयं सा
सयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं
बहु गुण प्प सायं, मुरक सुहेण
परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे वि

सायं कुणउ अ परिसावी अ प-
सायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ
अनंदिं, पावेउ अ नंदिसेण मन्नि
नंदिं ॥ परिसावि य सुह नंदिं,
सम्मय दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥
गाहा ॥ पक्किअ चाउम्मासे, सं-
वछरिए अवस्स नणिसव्वो ॥ सो
अव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो
एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ
जोअ निसुणइ, उन्नउ कालंपि अ-
जिअ संति थयं ॥ नहु हुंति तस्स
रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥
गाहा ॥ जइ इछह परम पयं, अ-

हवा किर्तिं सुविहरुं जुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणो, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति ॥



॥ अथ जक्तामरनामकं सप्तम स्मरणं ॥

॥ जक्तामरप्रणतमौलिमणि प्रजाणा, मुद्योतकं दलितपापतमो वितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा दुद्भूतबुद्धिपटुनिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये

किलाऽहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥ २ ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जल संस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमःसुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धत नक्रचक्रं, कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजा भ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यम

विचार्य मृगो मृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किल मधो मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंतति सन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलि नीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेदं, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो

हरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु, मुक्ता
फलद्युतिमुपैति ननूदबिंडुः ॥ ७ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्त समस्तदोषं,
त्वत्संकथापि, जगतां डुरितानि हंति
॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रजैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशन्नांजि
॥ ए ॥ नात्यद्भुतं नुवनन्नूषणन्नूत!
नाथ, न्नूतैर्गुणैर्नुवि न्नवंतमन्निष्टुवं
तः ॥ तुब्या न्नवंति न्नवतोननु तेन
किं वा, न्नूत्याश्रितं यइह नात्मसमं
करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वा न्नवंतमनिमे
षविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपया
तिजनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शा-

शिकारद्युतिदुग्धसिंधोः, क्षारं जलं
जलनिधेरशितुं कश्चेत् ॥ ११ ॥ यैः
शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥
तावंतएव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानपरं नहि रूपमस्ति ॥
१२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निः शेषनिर्जितजगत्रितयोपमानम
॥ विंबं कलंकमलिनं क्व निशाकर-
स्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाश-
कल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडल शशां
ककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रि भुवनं
तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजग-

दीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांग नांभि, र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्योन जातु मरुता चलताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगमज्ञ-

गंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभा
वः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र
लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमो-
हमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य
न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मु-
खाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगद
पूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं श-
र्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ
॥ निष्पन्नशालि वनशालिनि जीव
लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार
नम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि वि
भाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरि-

हरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवंतु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनोहरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वादिशो दधति भानि सहस्त्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं

पुमांस, मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरंमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात् ॥ त्वं शंकरोसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्ग विधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहर-

शयनाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलाम-
लभूषणाय ॥ तुभ्यं नम स्त्रिजगतः
परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिनभवोद
धिशोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयो
ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वंसं श्रि
तो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषै-
रुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः, स्वप्नां
तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥२७॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, मा
भाति रूपममलं भवतोनितांतम् ॥
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
विंवं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥
२८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखा-

विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कन-
कावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशु
लताविंतानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव
सहस्त्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदात
चलचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव
वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशां
कशुचिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सु
रगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्र
त्रयं तव विभाति शशांककांत, मु-
च्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम्
॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम ॥
॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकां

ति, पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरा
मौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र
धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिक-
ल्पयंति ॥ ३१ ॥ इत्थं यथा तव वि
भूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ
न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रभा दिन
कृतः प्रहतांधकारा, तादृकुतो ग्रहग
णस्य विकाशिनोपि ॥ ३२ ॥ श्च्यो
तन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्त
भ्रमद् भ्रमर नादविवृद्धकोपम् ॥
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा
भयं भवतिनो भवदाश्रितानाम् ॥
॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वल

शोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषित
भूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं ह
रिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगा
चलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतका
लपवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्व
लितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं
जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्ना
मकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६
॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम्
॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक,
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥
३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जित भीमनाद,

माज़ौ बलं बलवतामपि ज्ञूपतीनां॥
ज्ञ्द्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्व-
त्कीर्तनात्तमइवाशु ज्ञिदामुपैति॥३७
॥ कुंताग्रज्ञिन्नगजशोणित वारिवाह,
वेगावतारतरणातुरयोधज्ञीमे ॥ युद्धे
जयं विजितडुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पा
दपंकजवनाश्रयिणो लज्ञंते ॥३ए॥
अंज्ञोनिधौ कुज्ञितज्ञीषणनक्रचक्र,
पाठीनपीठज्ञयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥
रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा, स्त्रा
सं विहाय ज्ञवतः स्मरणाद्व्रजंति
॥ ४० ॥ उद्भूतज्ञीषणजलोदर
ज्ञारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्य

तजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजो
मृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकर
ध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठ
मुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निग
डकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रम
निशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं
विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्त
द्विपेन्द्रमृगराज दवानलाहि, संग्राम
वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्या
शु नाशमुपयाति भयं भियेव, य
स्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥
॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणै
र्निबद्धां, भक्त्या मयारुचिरवर्णवि

चित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति भक्तामरनामकस्तोत्रं सप्तमं स्मरणम् ॥ ७ ॥



॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं अष्टम स्मरणं प्रारभ्यते ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगु

तजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजो
मृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकर
ध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठ
मुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं वृहन्निग
डकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रम
निशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं
विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्त
द्विपेंद्रमृगराज दवानलाहि, संग्राम
वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्या
शु नाशमुपयाति भयं भियेव, य
स्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥
॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणै
र्निबद्धां, भक्त्या मयारुचिरवर्णवि

चित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति भक्तामरनामकस्तोत्रं सप्तमं स्मरणम् ॥ ७ ॥



॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं अष्टम स्मरणं प्रारभ्यते ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगु

र्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत मतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश भ वंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि शुर्यदि वा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्ष यादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गु- णान गणयितुं न तव क्षमेत ॥ क- ल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः

॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ज्ज
डाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसं
ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न
निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां
कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥
ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवे
श, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावका
शः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितका
रितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु प
क्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिंत्यमहि
मा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति
भवतो भवतो जगंति ॥ तीव्रातपोप
हत पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्म

र्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत
मतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य
कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष
किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्म
म् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं
स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश भ
वंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि
शुर्यदि वा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति
किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्ष
यादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गु-
णान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ क-
ल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः

॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ ज्ज
डाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसं
ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न
निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां
कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥
ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवे
श, वक्तुं कथं ज्ञवति तेषु ममावका
शः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितका
रितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु प
क्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिंत्यमहि
मा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति
ज्ञवतो ज्ञवतो जगंति ॥ तीव्रातपोप
हत पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्म

र्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत
मतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य
कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष
किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्म
म् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं
स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश भ
वंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि
शुर्यदि वा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति
किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्ष
यादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गु-
णान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ क-
ल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः

॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ज
माशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसं
ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न
निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां
कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥
ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवे
श, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावका
शः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितका
रितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु प
क्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिंत्यमहि
मा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति
भवतो भवतो जगंति ॥ तीव्रातपोप
हत पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्म

सरसः सरलोनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्
र्त्तिनि त्वयि विन्नो शिथिलीन्नवंति,
जंतोः क्षणेन निबिमा अपि कर्मबं
धाः ॥ सद्योन्नुजंगममया इव मध्य
न्नाग, मन्न्यागते वनशिखंमिनि चं
दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः
सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्व
यि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामिनि स्फु
रिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु
पशवः प्रपलायमानैः ॥ ए ॥ त्वं ता
रको जिनकथं न्नविनां त एव, त्वामु
द्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा
दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्ग

तस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभा
वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः-क्षपि
तः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतभुजः
पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि
दुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्न
नल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां
जंतवः कथमहो हृदये दधानाः ॥
जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन,
चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रभा
वः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो
प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत
कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्य

मुत्र यदिवा शिशिरापि लोके, नील द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य, दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्याना जिनेश भवतोभविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्स विभाव्यसेत्वं, भव्यैः कथं तदपि नाश

यसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशम यंति महानुन्नवाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिन्निरयं त्वदन्नेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र! न्नवतीह न्नवत्प्रन्नावः ॥ पानीयमप्यमृतयत्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विन्नो हरिहरादिधियाप्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिन्निरीश सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेश समये सविधानुन्नावा, दास्तां

न्नवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अभ्युङ्गते
दिनपतौ स महीरुहोपि, किंवा वि-
बोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १ए
॥ चित्रं विन्नो कथमवाङ्मुखवृंत
मेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्प
वृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदि
वा मुनीश, गहंति नूनमधएव हि
बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गन्नीर
हृदयोदधिसंन्नवायाः, पीयूषतां तव
गिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः
परमसंमदसंगन्नाजो, न्नव्या व्रजंति
तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वा
मिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो,

मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः
येऽस्मै न तिं विदधते मुनिपुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥
२२ ॥ श्यामं गम्भीरगिरमुज्वलहेम
रत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखं-
डिनस्त्वाम् ॥ आलोकयंति रभसेन
नदंतमुचै, श्चामी कराद्रिशिरसीव
नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव
शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशो
क तरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि
वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति
कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभोः
प्रमादमवधूय भजध्वमेन,

निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एत न्निवेदयति देवजगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरडुंभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोछ्वसितातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रय-पिंमितेन, कांतिप्रताप यशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्र-विनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्न भितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यसृजो-न नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य

रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ
श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सं-
गमे सुमनसो न रमंतएव ॥२८॥ त्वं
नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥
युक्तंहि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः
॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक
दुर्गतस्त्वं, किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलि-
पिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव
कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व
विकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसंभृत
नभांसि रजांसि, रोषाडुत्थापिता[

कमठेन शठेन यानि ॥ गयापि तै-
स्तव न नाथ हताहताशो, ग्रस्तस्त्व
मीभिरयमेव परं डुरात्मा ॥ ३१ ॥
॥ यदगर्जडुर्जितघनौघमदभ्रनीमं,
भ्रश्यत्तमिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥
दैत्येन मुक्तमथ डुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन डुस्तरवारिकृत्यम्
॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृता कृ-
तिमर्त्यमुंरू, पालंबभृद्र नयदवक्र-
विनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिनवंत-
मपीरितोयः, सोऽस्याऽनवत्प्रतिनवं
नवडुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त
एव नुवनाधिप ये त्रिसंध्य, मारा-

धयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥
नक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः,
पादद्वयं तव विभो भुवि जन्म भा-
जः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारि-
निधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवण-
गोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु
तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विष
धरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मां-
तरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये
मया महितमीहित दानदक्षम् ॥ ते-
नेह जन्मनि मुनीश पराभवानां,
जातो निकेतनमहं म
॥ ३६ ॥ नूनं न मोहति

लोचनेन, पूर्वं विज्ञोसकृदपि प्रवि-
लोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुर
यंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधग-
तयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आक-
र्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भ-
क्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव
दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति
न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ
दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य
पुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ भक्त्या
नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखां
कुरोद्दलनतत्परतांविधेहि ॥ ३९ ॥

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य,
मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम्
॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवं-
ध्यो, वध्योऽस्मिचेद् भुवनपावन
हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य
विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक
विभो भुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व
देव करुणाहृद मां पुनीहि, सीदं-
तमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥
यद्यस्ति नाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि संतति संचिता
याः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य
भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र

शांतेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधि-
यो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलक
कंचुकितांगभागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मल
मुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव
विभो रचयंति भव्याः ॥ ४३ ॥
आर्या ॥ जननयनकुमुदचंद्र, प्रभा
स्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥ ते वि-
गलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं
प्रपद्यंते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥

इति श्री कल्याणमंदिरनामकं
अष्टमं स्मरणं ॥ ८ ॥



॥ अथ बृहच्छांतिस्तवननामक
नवम स्मरण प्रारंभः ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ गद्यं ॥ भो भो भव्य लोका इह हि भरतैरावत विदेहसं भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषा घंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य

सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शांतिमूद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पंथाः इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोशयामि तत्पूजायात्रा स्नात्रादि महोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवंतोर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन स्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकपूज्या स्त्रिलोकेश्वरा

स्त्रिलोकोद्योतकराः ॥ ॐ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनंत धर्म शांति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानांता जिनाः शांताः शांतिकरा भवंतु स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय दुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वोनित्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधनप्रवेशननिवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतुते जिनेंद्राः

॥ ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रश्रृंखला वज्रांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गांधारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरुट्या अछुप्ता मानसी महामानसी षो डश विद्यादेव्यो रक्षंतु वोनित्यं स्वा हा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चा तुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांति र्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतुसहिताः सलो कपालाः सोम यम वरुण कुबेरवास दत्य स्कंदविनायकोपेताः ये चा

न्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां अक्षीण कोश कोष्ठागारानरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिँश्च भूमंडलायतनन्निवासि साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्या धिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धि मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यंतु दुरितानि ॥ श पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ २

शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्य र्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रह गतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादि तहितसंप, न्नामग्रहणं जयति शां ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराज्यसन्निवेशानाम् ॥ गोष्टिक पुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु, श्रीजन

पदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराज्यसन्निवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्रीपुरमुख्याणां शांतिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु ॥ ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांति प्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवास कुसुमांजलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्प वस्त्र चंदनाभरणालंकृतः पुष्पमाला कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा

शांति पानीयं मस्तके दातव्यमिति॥
नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति
गायंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि
गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याण
भाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ शिव
मस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता
भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु
नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥
२ ॥ अहं तित्थयरमाया सिवादेवी
तुम्ह नयर निवासिनी ॥ अम्ह सिवं
तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवंभ-
वंतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं
यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः

प्रसन्नतामेति, पुज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

॥ इति बृहच्छांतिनामकं नवम स्मरणं समाप्तम् ॥

जयतिहुअण स्तोत्र.

जय तिहुअण वर कप्प-रुख जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअण कल्लाण-कोस दुरिअ करि केसरि; तिहुअण जण अविलंघि-आण भु-वण त्तय सामिअ, कुणसु सुहाइ

जिणेस-पास थंभणय पुर टिठअ॥१॥ तइ समरंत लहंति-झत्ति वर पुत्त कलत्तइ, धण्ण सुवण्ण हिरण्ण-पुण्ण जण भुंजइ रज्जइ; पिक्खइ मुक्ख असंख-सुक्ख तुह पास पसा इण, इअ तिहुअण वर कप्प रुक्ख सुक्खइ कुण मह जिण ॥२॥ जर ज ज्जर परिजुण्ण-कण्ण नट्ठुट्ठ सु कुट्ठिण, चक्खु क्खीण खएण-खुण्ण नर सल्लिय सूलिण, तुह जिण सरणरसाय-णेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धन्नंतरि पासमह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जा

जोइस मंत-तंत सिद्धि अपय
त्तिया, नुवथाऽज्जुत्तअट्ठविह—सिद्धि
सिज्झहि तुह नामिया; तुह ना
मिया अपवित्त-त्तवि जया होइ प
वित्तउ, तं तिहुअया-कल्लाया-कोस
तुह पास निरुत्तउ ॥४॥ खुद्द पउत्तइ
मंत-तंत जंताइ विसुत्तइ, चर थिर
गरल गहुग्ग-खग्ग रिउ वग्गुं वि
गंजइ; दुत्थिय सत्थ अयात्थ—घत्थ नि
त्थारइ दय करि, दुरियइ हरउस
पास-देउ दुरिय क्करि केसरि ॥ ५ ॥
तुह आया थंभेइ-भीम दप्पुद्धुर
सुरवर रक्खस जक्ख फायिंद-विंद

चोरानल जलहर; जलधर चारि रउद्द-खुद्द पसु जोइणि-जोइय, इय तिहुअण अविलंघि-आण जय पास सुसामि य ॥ ६ ॥ पत्थिय अत्थ अणत्थ-तत्थ भत्तिब्भर निब्भर, रोमंचंचिय चारु-काय किन्नर नर सुर वर; जसु सेवहि कम कमल-जुयल पक्खालिय कलिमलु सो भुवणत्तय सामि-पास मह मद्दउ रिउ-वलु ॥७॥ जय जोइय मण कमल-भसल भय पंजर कुंजर, तिहुअण जण आणंद-चंद भुवण त्तय दि-णयर; जय मइ मेइणि वारि-वाह

जयजंतु पियामह, अंन्नणाय ट्रिव्य
पास-नाह नाहत्तण कुण मह ॥८॥
वहु विहु वन्नु अवन्नु-सुन्नु व
न्निन उप्पन्निहि, मुक्क घम्म का
मठ-काम नर नियनिय सत्थिहि;
जं ज्झायहि वहु दरिस-णाठ वहु
नाम पसिद्धउ, सो जोइय मण क
मल-न्नसल सुहु पास पवद्धउ ॥९॥
न्नय विब्भल रण झणिर-दसण थ
रहरिय सरीरय, तरलिय नयण
विसुन्न-सुन्न गग्गरगिर करुणाय; तइ
सहसत्ति सरंत-हुति नर नासिय
गुरुदर, मह विज्झवि सज्झसइ-

पास जय पंजर कुंजर ॥ १० ॥
पई पासि वियसंत-नित्त पत्तंत प
वित्तिय, वाह पवाह पवूढ-रुढ दुह
दाह सुपुलइय; मन्नइ मन्नु सउन्नु
पुन्नु अप्पाणं सुरनर, इय तिहु
अण आणंद-चंद जय पास जिणे
सर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसु
घंटटंकारऽवपिल्लिय वल्लिर मल्ल
महल्ल-भत्तिसुरवरगंजुल्लिय, हल्लु
प्फलिय पवत्त–यंति भुवणेवि महू
सव, इय तिहुअण आणंद–चंद
जय पास सुहुब्भव ॥ १२ ॥ नि
म्मल केवल किरण-नियर विहुरिय

तम पहयर, दंसिय सयल पयत्थ-
सत्थ विछरिय पहायर; कलि क
लुसिय जण धूय-लोय लोयणह अ
गोयर, तिमिरइ निरु हर पास-
नाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥
तुह समरण जल वरिस-सित्त मा
णव मइ मेइणि, अवरावर सुहुम
त्थ-बोह कंदल दल रेहणि; जायइ
फल भर भरिय-हरिय दुह दाह
अणोवम, इय मइ मेइणि वारि-
वाह दिस पास मइं मम ॥ १४ ॥
कय अविकल कल्लाण-वल्लि उल्लू
रिय दुह वणु, दाविय सग्ग पवग्ग

मग्ग डुग्गइ गम वारणु; जय जं
तुह जणएण तुह जं जणिय हि
यावहु, रम्मु धम्मु सो जयउ-पास
जय जंतु पियामहु ॥ १५ ॥ भुव
णारणय निवास-दरिय परदरिसण
देवय जोइणि पूयण खित्त—वाल
खुद्दासुर पसुवय; तुह उत्तट्ठ सुन
ट्ठ-सुट्ठु अविसंट्ठुलु चिट्ठहि,
इय तिहुअण वण सीह-पास पा
वाइ पणासहि. ॥ १६ ॥ फणि फण
फार फुरंत-रयणकर रंजिय नह
यल-फलिणी कंदल दल-तमाल नि
भल सामल; कमठासुर उवस

ग्ग-वग्ग संसग्ग अगंजिय, जय प
च्चक्क जिणेस-पास थंभणय पुरट्ठि
ठय. ॥ १७ ॥ मह मणु तरलु प
माणु-नेय वायावि विसंठुलु, नेय
तणुरऽवि अविणय-सहावु अलस
विहलंथलु; तुह माहप्पु पमाणु-
देव कारुणूण पवित्तउ, इय मइ मा
अवहीरि-पास पालिहि विलवं
तउ. ॥ १८ ॥ किं किं कप्पिउ नेय-
कलुणु किं किं व न जंपिउ, किं
वन चिट्ठिउ किट्ठू-देव दीणय
मऽवलंबिउ, कासु न किय निप्फल्ल
लल्लि अम्हेहि उहत्तिहि, तहवि

न पत्तउ ताणुं-किंपि पइ पहु परि चत्तिहि. ॥ १९ ॥ तुहु सामिउ तुहु माइ-बप्पु तुहु मित्त पियंकरु, तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि-ताणु तुहु गुरु खेमंकरु, हउं दुह भर भारिउ-वराउ राउ निब्भग्गह, लीणउ तुह कम कमल-सरणु जिण पालहि चंगह. ॥ २० ॥ पइ किवि कय नीरोय-लोय किवी पाविय सुहसय, किवि मइमंत महंत-केवि किवि साहिय सिव पय; किवि गंजिय रिउवग्ग-केवि जसधवलिय भूयल, मइ अवहीरहि केण-पास

सरणागयवच्छल. ॥ २१ ॥ पच्चुवया
र निरीह-नाह निपन्न पन्नयण, तुह
जिण पास परोव-यार करणिक्क
परायण; सत्तु मित्त समचित्त-वि
त्ति नयनिंदय सममण, मा अवही
रिय ऽजुग्ग-ज्ञविमइं पास निरंजण
॥२२॥ हउ बहुविहदुह तत्त-गत्तु तु
ह दुह नासण परु, हउ सुयणह
करुणिक्क-ठाणु तुहु निरु करुणापरु;
हउ जिण पास असामि--सालु तुहु
तिहुअण सामिय, जं अवही
रहि मइं-ऊखत इय पास न सो
हिय ॥ २३ ॥ जुग्गाऽजुग्ग विभा
ग-नाह नहु जोयहि तुह सम, तु.

धणुवयार सहाव-ज्ञाव करुणा रस
सत्तम, सम विसमइं किं घणु-निय
इ भुवि दाह समंतउ, इय डुहि
बंधव पास-नाह मइ पाल थुणंतउ.
॥ २४ ॥ नय दीणह दीणयुं-मुयवि
अन्नुवि किवि जुग्गय, जं जोइवि
उवयार-करहि उवयार समुज्जय;
दीणह दीणु निहीणु-जेण तइ ना
हिण चत्तउ, तो जुग्गउ अहमेव-
पास पालहि मइ चंगउ. ॥ २५ ॥
अह अन्नुवि जुग्गय वि-सेसु किवि
मन्नहि दीणह, जंपासिवि उवयारु-
करइ तुह नाह समग्गह; सुच्चिय
किल कल्लाणु-जेण जिण तुम्ह प-

सीयइ, किं अन्निण तं चेव-देव मां मइ अवहीरइ. ॥ २६ ॥ तुह पत्थण न हु होइ-विहलु जिण जाणउ किं पुण, हउ दुक्खिय निरुसत्त-चच दुक्कहु उस्सुयमण; तं मन्नउ निमिसेण-एउ एउवि जइ लब्भइ सच्चं जं भुक्खिय व-सेण किं उंवरु पच्चइ. ॥ २७ ॥ तिहुअण सामिय पास-नाह मइ अप्पु पयासिउ, कि ज्जउ जं निय रुव-सरिसु न मुणउ वहु जंपिउ, अन्न न जिण जग्गि तुह समो वि दक्खिन्नु दयासउ, जइ अवगन्नसि तुह जि-अहह कह हो सु दयासउ. ॥ २८ ॥ जइ तुह रु

धणुवयार सहाव-न्नाव करुणा रस सत्तम, सम विसमइं किं धणु-निय इ भुवि दाह समंतउ, इय उहि बंधव पास-नाह मइ पाल थुणंतउ. ॥ २४ ॥ नय दीणह दीणयुं-मुयवि अन्नुवि किवि जुग्गय, जं जोइवि उवयार-करहि उवयार समुज्जय; दीणह दीणु निहीणु-जेण तइ ना हिण चत्तउ, तो जुग्गउ अहमेव-पास पालहि मइ चंगउ. ॥ २५ ॥ अह अन्नुवि जुग्गय वि-सेसु किवि मन्नहि दीणह, जंपासिवि उवयारु-करइ तुह नाह समग्गह; सुच्चिय किल कल्लाणु-जेण जिण तुम्ह प-

सीयइ, किं अन्निण तं चेव-देव मां मइ अवहीरइ. ॥ २६ ॥ तुह पत्थ ण न हु होइ-विहलु जिण जाणउ किं पुण, हउ दुक्खिय निरुसत्त-चत्त दुक्कहु उस्सुयमण; तं मन्नउ निमिसेण-एउ एउवि जइ लब्भइ सच्चं जं भुक्खिय व-सेण किं उंवरु पच्चइ. ॥ २७ ॥ तिहुअण सामिय पास-नाह मइ अप्पु पयासिउ, किज्जउ जं नियरुव-सरिसु न मुणउ वहु जंपिउ, अन्न न जिण जग्गि तुह समो वि दक्खिन्नु दयासउ, जइ अवगन्नसि तुह जि-अहह कह हो हु हयासउ. ॥ २८ ॥ जइ

विण किण वि-पेय पाइण वेलविय
उ, तुवि जाणउ जिण पास-तुम्हि
हउं अंगीकरिउ; इय मह इत्थिउ
जं न-होइ सा तुह उहावणु, रक्
खंतह निय कित्ति-णेय जुज्जइ अव
हीरणु ॥ १९ ॥ ए हमहारिय जत्त
देव इहु न्हवण महुसउ, जं अण
लिय गुणगहण-तुह मुणि जण अ
णिसिद्ध; एम पसीय सुपास-नाह
थंभण पुरट्ठिय, इय मुणिवरु सि
रि अभय-देउ विन्नवइ अणिंदिय.

॥ इति श्री जयतिहुअण स्तोत्र संपूर्ण.॥
शिवि नडं नवतु सकलस्य जगतः शान्तिः



॥ श्री ॥

॥ जिनपञ्जरस्तोत्र. ॥

कमलप्रभाचार्यविरचितम्.

ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ अर्हद्भ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ आचार्येभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ गौतमप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं

न्नवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जये विजय, अर्हं परमात्मने नमः॥ कमलप्रन्नसूरीन्द्रो, न्नाषते जिनप ञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकन्नक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥ मनोऽन्नि लषितं सर्वं, फलं स लन्नते ध्रु वम् ॥ ४ ॥ न्नूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रो धलोन्नविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवि त्रात्मा, षण्मासैर्लन्नते फलम् ॥५॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षु र्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्य उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥ सा धुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं वि

घाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांच जिनो रक्षेदाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणाशां परब्रह्म, नैरृतीं च त्रिकालवित्॥९॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामी, शानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं

नवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ
जये विजय, अर्हं परमात्मने नमः॥
कमलप्रनसूरीन्द्रो, नाषते जिनप
ञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकनक्तोपवासेन,
त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥ मनोऽनि
लषितं सर्वं, फलं स लनते ध्रु
वम् ॥ ४ ॥ नूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रो
धलोनविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवि
त्रात्मा, षण्मासैर्लनते फलम् ॥५॥
अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षु
र्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्य
उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥ सा
धुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं वि

धाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः
सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मद
नद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥
अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवं
करः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांच जिनो रक्षे-
दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणाशां
परब्रह्म, नैरृतीं च त्रिकालवित्॥ए॥
पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां प
रमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामी,
शानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं
भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥
रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु स
कलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं

रक्षे-दजितोऽपि विलोचनम् ॥ सं
भवः कर्णयुगलेऽभिनन्दनस्तु ना
सिके ॥ १२ ॥ उष्ठो श्रीसुमतो रक्षे
दन्तान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सु
पार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभाभि
धः ॥ १३ ॥ कंठ श्रीसुविधी रक्षेद्,
हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बा-
हुयुगलं. वासुपूज्यः करद्वयम्॥१४॥
अङ्गुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ न
खानपि ॥ श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि,
श्रीशान्तिर्नाभिमंडलम् ॥ १५ ॥
श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षेदरो लोमकटी
तटम् ॥ मल्लिरूरुपृष्ठवंशं, जङ्घ च

नुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादाङ्गुलीर्नमी रक्के-ह्रीनमिश्वरणाद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व नाथः सर्वाङ्गं, वर्धमानश्चिदात्म कम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क-वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्केदशेष पापेन्यो,वीतरागो निरञ्जनः॥१८॥ राजद्वारे स्मशाने च, संग्रामे शत्रु संकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादिनूत प्रेतन्नयाशिते ॥ १८ ॥ आकाले म रणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे *महाडुःखे, मूर्खत्वे रोग

---

* महादोषे.

पीडिते ॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनी
ग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता
रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्म
रेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः
स्मरे ज्जिनपञ्जरम् ॥ तस्य किञ्चि
द्भयं नास्ति,लभते सुखसंपदः॥२२॥
जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवास
रम् ॥ कमलप्रभराजेन्द्र-श्रियं स
लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समु
त्थाय पठेत्कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जि
नपञ्जरस्य ॥ आसादयेत्सोकमलप्र-
भाख्यं,लक्ष्मीमनोवाञ्छितपूरणाय॥

श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभा-
चार्यपदाब्जहंसः ॥ वादीन्द्रचूडाम-
णिरेष जैनो, जीयाद्गुरुः श्रीकमल-
प्रभाख्यः ॥

॥ इति श्रीकमलप्रभाचार्यविरचित
सर्वरक्षाकरं श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रं
समाप्तम् ॥

---

१ आ श्लोक मूल पुस्तकमां नथी, परंतु कमलप्रभाचार्यना शिष्ये बनावेल छे एम लागे छे.

॥ श्री ॥

॥ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ॥ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, भव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीड्यन्ति खेचराः ॥ तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहिताञ्जिनान्. ॥ २ ॥ पुष्पैर्गन्धैर्धूपदीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥ वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ३ ॥ पद्मप्रभश्च मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ॥ वासुपूज्यो

भूसुतश्च, बुधोऽप्यष्टजिनेश्वराः॥४॥
विमलानन्तधर्माऽराः, शान्तिः कु
न्थुर्नमिस्तथा ॥ वर्धमानो जिने
न्द्राणां, पादपद्मे बुधो न्यसेत् ॥५॥
ऋषभाजितसुपार्श्वाश्चाभिनन्दन शी
तलौ ॥ सुमतिः संभवस्वामी, श्रे
यांसश्च बृहस्पतिः ॥ ६ ॥ सुविधेः
कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्वरः ॥
नेमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः
श्रीमल्लीपार्श्वयोः ॥ ७ ॥ जिनाना
मग्रतः कृत्वा, ग्रहरणां शान्तिहेतवे॥
नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं
शतम् ॥ ८ ॥ भद्राहूरुवाचैवं, प

ग्रमश्रुतकेवली ॥ विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥९॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर राहु केतुसहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वस्तिष्ठन्तु, मम धनधान्यजयविजय सुखसौभाग्यधृतिकीर्तिकान्ति शांति तुष्टिपुष्टिबुद्धिलक्ष्मी धर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा ॥

॥ इति श्रीग्रहशान्तिस्तोत्रं समाप्तम् ॥



अथ श्रीपार्श्वनाथस्य

॥ मन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥

॥ ॐ नमः सिद्धम् ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशंकरः ॥ नाथः परमेशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥ सर्व विघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः॥ सर्वसत्त्वहितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्वयंसिद्ध, श्चिदानन्दमयः शिवः ॥ परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥ जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः ॥ सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्री

निवासः शुभ्रार्णवः॥४॥ सर्वज्ञःसर्व
देवेशः, सर्वदःसर्वगोत्तमः॥ सर्वात्मा
सर्वदर्शी च,सर्वव्यापी जगद्गुरुः॥५॥
तत्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रका-
शकः॥ परमेन्दुः परप्राणः, परमामृ
तसिद्धिदः ॥६॥ अजः सनातनः श
म्भुरीश्वरश्च सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरः
प्रमोदात्मा, क्षेत्राधिशः शुभ्रप्रदः॥७
साकारश्च निराकारः, सकलो निष्क
लोऽव्ययः ॥ निर्ममो निर्विकारश्च,
निर्विकल्पो निरामयः॥८॥ अमरश्चा
जरोऽनन्त,एकोऽनन्तः शिवात्मकः॥
अलक्ष्यश्चाप्रमेयश्च,ध्यानलक्ष्यो नि:

रञ्जनः ॥ ए ॥ ॐकाराकृतिरव्यक्तो,
व्यक्तरूपस्त्रयीमयः ॥ ब्रह्मद्वय प्रका
शात्मा, निर्भयः परमाक्षरः॥१०॥दि
व्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽ
च्युतः॥ आद्योऽनाद्यः परेशानः, पर
मेष्ठी परः पुमान् ॥११॥ शुद्धस्फटि
कसंकाश, स्वयंभूः परमाच्युतः ॥
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोका-
वभासकः ॥१२॥ ज्ञानात्मा परमा-
नन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः ॥
मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः
परापरः॥१३॥ सर्वतीर्थमयो नित्यः,
सर्वदेवमयप्रभुः ॥ भगवान् सर्वत-

त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥१४॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः॥ दिव्यमष्टोत्तरं नामशतमत्र प्रकीर्तितम् ॥१५॥पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्ददायकम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं, पठते मङ्गलप्रदम्॥१६॥ श्रीमत्परमकल्याण सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तु वः॥ पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः ॥ १७॥ धरणेन्द्र फणछत्रालंकृतो वः श्रियं प्रभुः ॥ दद्यात्पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठितशासनः॥१८॥ध्यायेत्कमलमध्यस्थं,श्री पार्श्वं जगदीश्वरम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रः

समायुक्तं,केवलज्ञानभास्करम्॥१९
पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण द
क्षिणे ॥ परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्ररा
जेन संयुतम् ॥२०॥ अष्टपत्रस्थितैः
पञ्चनमस्कारैस्तथा त्रिभिः॥ज्ञानाद्यै
र्वेष्टितं नाथं,धर्मार्थकाममोक्षदम्॥२१
शतषोडशदलारूढं, विद्यादेवीभिर
न्वितम् ॥ चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं
मातृसमावृतम् ॥ २२॥ मायावेष्टय
त्रयाग्रस्थं, क्रौँकारसहितं प्रभुम् ॥
नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्दशभिर्वृ
तम् ॥ २३ ॥ चतुष्कोणेषु मन्त्राद्य,
चतुर्बीजान्वितौर्जिनैः ॥ चतुरष्टदश

ह्रीति, द्विधाङ्कसंज्ञकैर्युतम् ॥ २४ ॥
दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लाङ्कि
तेन च ॥ चतुरस्त्रेण वज्राङ्कक्षिति
तत्वे प्रतिष्ठितम् ॥ २५ ॥ श्रीपार्श्व-
नाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम्॥
तं सर्वपाप निर्मुक्तं, भजते श्रीः शु
भप्रदा ॥ २६ ॥ जिनेशः पूजितो भ
क्तया, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ॥ ध्या
तस्त्वं यैः क्षणं वापि, सिद्धिस्तेषां
महोदया ॥२७॥ श्री पार्श्वमन्त्रारा-
जान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥
शान्तिपुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रव
॥ २८ ॥ ऋद्धिसिद्धिमहा-

बुद्धिधृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ॥ मृ
त्युंजयं शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो
जनः ॥२९॥ सर्वकल्याणपूर्णः स्या
ज्जरामृत्युविवर्जितः ॥ अणिमादिम
हासिद्धिं,लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥३०
प्राणायाममनोमन्त्रयोगादमृतमात्म
नि ॥ त्वामात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वा
मिन् सिध्यन्ति जन्तवः ॥ ३१ ॥ हृ
षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्य
दः ॥ पातु वः परमानन्दलक्षणः सं
स्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥ तत्वरूपमिदं
स्तोत्रं, सर्वमङ्गलसिद्धिदम् ॥ त्रिसं-
ध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स
श्रियम् ॥ ३३ ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र ॥

आद्यंताक्षरसंलक्ष । मक्षरंवाप्य
यत् स्थितं ॥ अग्निज्वाला समंनाद ।
बिंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वा
लासमाक्रांतं । मनोमलविशोधकं॥दे
दीप्यमानं हृत्पद्मे । तत्पदं नौमि नि
र्मलं ॥ २ ॥ अर्हं मित्यक्षरंब्रह्म । जं
चकंपरमेष्टिनः॥सिद्धचक्रस्य सद्वीजा
। सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ न
मोर्हद्भ्य ईशेभ्यः।ॐ सिद्धेभ्योनमो
नमः॥ ॐनमः सर्वसूरिभ्यः। उपाध्या
येभ्यः ॐनमः॥४॥ ॐनमः सर्वसाधु
भ्यः॥ ॐ ज्ञानेभ्योनमोनमः ॥ ॐ न
म स्तत्वदृष्टिभ्य ।श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ

नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्येत । दर्हदाद्यष्टकंशुभं ॥ स्थानेष्वष्टसुवि न्यस्तं । पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यंपदंशिखांरक्षे । त्परंरक्षेत्तुमस्त कं ॥ तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे । तुर्यंरक्षेच्च नासिकां ॥७॥ पंचमंतु मुखंरक्षेत् । षष्टंरक्षेच्चघंटिकां ॥नाभ्यंतंसप्तमंरक्षे । द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वंप्रण वतः सांत । सरेफोद्व्यब्धिपंचषान् ॥ सप्ताष्टदशसूर्यांकान् । श्रितोबिंदु स्वरान्पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः । पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारि त्रेभ्यो नमो मध्ये । ह्रीं सांतद्व सम लंकृतः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॐ । ह्रां । ह्रीं ।

ह्रां। ह्रीं। ह्रूं। ह्रैं। ह्रौं। ह्रः॥ असि आउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः ॥❀॥ जंबूवृक्षधरोद्वीपः। क्षारोदधिस मावृतः। अर्हदाद्यष्टकैरष्ट। काष्टाधि ष्टैरलंकृतः॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतो मेरुः। कूटलक्षैरलंकृतः॥ उच्चैरुच्चैस्त रस्तार। स्तारामण्डलमंडितः॥१२॥ तस्योपरिसकारांतं। वीजमध्यास्य सर्वगं॥ नमामि विंवमार्हत्यं। लला टस्थं निरंजनं॥ १३ ॥ अक्षयंनिर्म लंशांतं। बहुलं जाड्यतोऽज्झितं॥ नि रीहं निरहंकारं। सारं सारतरंघनं॥ १४॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं। सात्वि कं राजसंमतं॥ तामसं चिरसंबुद्धं

तैजसंशर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारंच निराकारं । सरसं विरसंपरं ॥ परापरं परातीतं । परंपर परापरं ॥१६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच । त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं॥ पंचवर्णं महावर्णं । सपरंच परापरं ॥१७॥ सकलं निष्कलं तुष्टं । निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं । निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं । बुद्धं सिद्धं मतंगुरु ॥ ज्योतीरूपं महादेवं । लोकालोक प्रकाशकं ॥१९॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णांतः। सरेफोबिंदुमंडितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो । बहुधानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन्बीजे स्थिताः सर्वे। ऋषभा

द्याजिनोत्तमाः॥वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता।
ध्यातव्या स्तत्रसंगताः ॥ २१॥ नाद
श्चंद्रसमाकारो।बिंदुर्नीलसमप्रभः॥
कलारुणसमासांतः। स्वर्णाभः सर्व
तोमुखः ॥२२॥ शिरःसंलीन ईका-
रो। विनीलोवर्णतः स्मृतः॥ वर्णानु
सारसंलीनं। तीर्थकृन्मंडलंस्तुमः॥
२३ ॥ चंद्रप्रभ पुष्पदंतौ। नादस्थि
तिसमाश्रितौ॥बिंदुमध्यगतौनेमि।
सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥ पद्मप्रभु
वासुपूज्यौ।कलापदमधिष्ठितौ॥ शि
रईस्थितिसंलीनौ। पार्श्वमल्ली जिने
श्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतःसर्वे।
हरस्थाने नियोजिताः॥ मायाबीजा

क्रंप्राप्ता । श्चतुर्विंशतिरर्हतां ॥२६॥ गतरागद्वेषमोहाः । सर्वपापविवर्जिताः ॥ सर्वदाः सर्वकालेषु । ते नवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययश्च क्रं । तस्य चक्रस्य या विन्ना ॥तयाछादित सर्वाङ्गं । मामांहिनस्तु नाकिनि ॥ २०॥ देवदेवस्य० । मामांहिनस्तु राकिनी ॥२ए॥ देवदे० । मामांहिनस्तु लाकिनी ॥३०॥ देवदे० । मामांहिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदे० । मामांहिनस्तु शाकिनी ॥३२॥देव० । मामांहिनस्तु हाकिनी ॥३३॥देव० । मामांहिनस्तु याकिनी ॥३४॥देव० । मामांहिंसंतु पन्नगाः ॥ ३५ ॥ देव०

मामांहिंसंतुं हस्तिनः ॥३६॥देवदें०।
मामांहिंसंतु राक्षसाः ॥३७॥देव० ।
मामांहिंसंतु वएह्यः ॥३८॥ देव०।
मामांहिंसंतु सिंहकाः ॥३९॥ देव०।
मामांहिंसंतु उर्ज्जनाः ॥४०॥ देव०।
मामांहिंसंतु नूमिपाः ॥४१॥ श्रीगौ
तमस्ययामुद्रा । तस्यायान्नुविलब्ध
यः ॥ तान्नि रन्नुद्यतज्योति । रहंस
र्वनिधीश्वराः ॥४२॥ पातालवासिनो
देवा । देवान्नूपीठ वासिनः ॥ स्वर्वा
सिनोपि ये देवाः। सर्वे रक्षंतु मामि
तः ॥४३॥ येऽवधिलब्धयो येतु । प
रमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयोदे
वाः। मांस रक्षंतु सर्वदा ॥४४॥ ऊ

र्जनाद्भूतवेत्तालाः । पिशाचामुद्गला
स्तथा॥ ते सर्वे प्युपशाम्यंतु । देवदेव
प्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीश्च धृ
ति र्लक्ष्मी । गौरी चंडी सरस्वती ॥
जयांबा विजयानित्या । क्लिन्ना जि-
ता मदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम
वाणाच । सानंदानंदमालिनी ॥ मा
या मायाविनी रौद्री । कला काली
कलि प्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा म
हादेव्यो । वर्त्तंतेयाजगत्त्रये ॥ मह्यं
सर्वाःप्रयछंतु । कांतिंकीर्तिंधृतिंमतिं
॥ ४८॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः।
श्रीऋषिमंडलस्तव ॥ भाषितस्तीर्थ
नाथेन । जगत्त्राण कृतेनघः॥४९॥

रणेराज कुलेवन्हौ। जलेदुर्गे गजे
हरौ।। श्मशाने विपिने घोरे। स्मृतो
रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्य भ्रष्टा
निजं राज्यं । पद भ्रष्टा निजं
पदं ॥ लक्ष्मी भ्रष्टा निजां लक्ष्मी ।
प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्या
र्थी लभते भार्यां । पुत्रार्थी लभते
सुतं ॥ वित्तार्थी लभते वित्तं । नरः
स्मरण मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णरूप्ये
पट्टेकांस्ये । लिखित्वा यस्तुपूजयेत्॥
तस्यैवाष्टमहासिद्धि। गृहेवसति शा
श्वती ॥ ५३ ॥ भूर्यपत्रेलिखित्वेदं ।
गलके मूर्द्धनि वा भुजं ॥ धारितं स
र्वदा दिव्यं । सर्वभीति विनाशकं ॥

५४ ॥ भूतैःप्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः । पिशाचैर्मु
द्गलैर्मलै ॥ वातपित्तकफोद्रेकै । र्मुच्य
ते नात्रसंशय ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्व
स्त्रयीपीठः । वर्त्तिनःशाश्वताजिनः॥
तैःस्तुतै र्वंदितै र्दृष्टै । र्यत्फलंतत्फलं
श्रुतौ ॥५६॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं ।
नदेयं यस्यकस्यचित् ॥ मिथ्यात्ववा
सिने दत्ते । बालहत्यापदेपदे ॥५७॥
आचाम्लादितपःकृत्वा । पूजयित्वा
जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्त्रिको जापः ।
कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतम
ष्टोत्तरंप्रात । र्येपठंति दिनेदिने ॥ ते
षांनव्याधयोदेहे । प्रभवंति नचापदः
॥५९॥ अष्टमासावधिंयावत् । प्रातः

प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमेतन्महाते
जो । जिनबिंबं स पश्यति ॥६०॥ दृष्टे
सत्यर्हतो बिंबे । भवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं
प्राप्नोति शुद्धात्मा । परमानंदनंदितः
॥६१॥ विश्ववंद्यो भवेध्याता । कल्या
णानि च सोऽश्नुते ॥ गत्वा स्थानं परं सो
पि । भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं
स्तोत्रं महास्तोत्रं । स्तुतीनामुत्तमं प
रं ॥ पठनात्स्मरणा ज्जापा । ल्लभ्यते
पदमुत्तमं ॥६३॥ इति श्रीऋषिमंडल
स्तोत्रं ॥ क्षेपक श्लोकान्निराकृत्यमूल
यं त्रकल्पानुसारेण ॥ लिखितं ॥ ग
णिः श्री क्षमाकल्याणोपाध्यायैः ॥
तस्योपरि मयापि लिखितं इदं स्तोत्रं ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ श्री तत्वार्थसूत्रम् ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः १ ॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् २॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ३॥ जीवाजीवाश्रवबंधसंवर निर्जरामोक्षास्तत्वम् ४॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ६ ॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ७ ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानी ज्ञानम् ८ ॥ सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालांतरभावाल्प

बहुत्वैश्च ए ॥ तत्प्रमाणे १० ॥ आद्यै परोक्षम् ११ ॥ प्रत्यक्षमन्यत् १२॥मतिस्मृतिसंज्ञाचिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरम् १३ ॥ तदिंद्रियानिंद्रियनिमित्तम् १४॥ अवग्रहेहापायधारणाः १५ ॥ बहुबहुविधक्षिप्रानिश्रितासंदिग्धध्रुवाणां सेतराणाम् १६ ॥अर्थस्य १७ ॥ व्यंजनस्यावग्रहः १८॥न चक्षुरनिंद्रियाभ्याम् १९ ॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् २० ॥ द्विविधोऽवधिः २१ ॥ भवप्रत्ययो नारकदेवानाम् २२ ॥ यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् २३॥ऋजुविपुलमती

मनः पर्यायः २४॥ विशुद्ध्यप्रतिपाता
भ्यां तद्विशेषः २५ ॥ विशुद्धिक्षेत्र
स्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्याययोः
२६ ॥ मतिश्रुतयोर्निबंधःसर्वद्रव्येष्व
सर्वपर्यायेषु २७॥ रूपिष्ववधेः २८॥
तदनंतभागे मनःपर्यायस्य २९॥सर्व
द्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ३०॥ एकादी
निभाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः
३१ ॥ मतिश्रुतावधयो (मतिश्रुतावि
भंगा) विपर्ययश्च ३२॥ सदसतोरवि
शेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ३३॥ नै
गमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दा नयाः
३४ ॥ आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ ३५ ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च १ ॥ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् २ ॥ सम्यक्त्वचारित्रे ३ ॥ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ४॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ५॥ गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धत्वलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ६ ॥ जीवभव्याभव्यत्वादीनि च ७ ॥ उपयोगो लक्षणम् ८ ॥ सद्विविधोऽष्टचतुर्भेदः९ ॥संसा

रिणा मुक्ताश्च १०॥ समनस्का अम
नस्काः ११॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः
१२ ॥ पृथिव्यंबुवनस्पतयः स्थावराः
१३ ॥ तेजोवायुर्द्वींद्रियादयश्च त्रसाः
१४ ॥ पंचेंद्रियाणि १५॥ द्विविधानि
१६॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येंद्रियम् १७
॥ लब्ध्युपयोगौ भावेंद्रियम् १८ ॥उ
पयोगः स्पर्शादिषु १९ ॥ स्पर्शनरस
न घ्राण चक्षुःश्रोत्राणि २०॥ स्पर्शरस
गंधरूपशब्दास्तेषामर्थः २१॥ श्रुतम
नोंद्रियस्यार्थः२२॥ वाय्वंतानामेकम्
२३॥कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादी
नामेककवृद्धानि २४॥ संज्ञिनः सम

नरकाः २५ ॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः २६॥ अनुश्रेणिगतिः २७॥ अविग्रहा जीवस्य २८॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः २९ ॥ एकसमयोऽविग्रहः ३० ॥ एकं द्वौ चानाहारकः ३१ ॥संमूर्छनगर्भोपपाताजन्मः ३२॥ सचित्तशीतसंवृताः सेतरामिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ३३ ॥ जराय्वंडपोतजानां गर्भः ३४॥नारकदेवानामुपपातः ३५॥ शेषाणां संमूर्छनम् ३६॥ औदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणानिशरीराणि ३७॥ परंपरं सूक्ष्मम् ३८ ॥प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ३९

॥ अनंतगुणे परे ४०॥ अप्रतिघाते ४१ ॥ अनादिसंबन्धे ४२ ॥ सर्वस्य ४३ ॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्याच तुर्भ्यः ४४॥ निरूपभोगमंत्यम् ४५॥ गर्भसंमूर्छनमाद्यम् ४६॥ वैक्रियमौपपातिकम् ४७॥ लब्धिप्रत्ययं च ४८॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव ४९ ॥ तैजसमपि ५०॥नारकसंमूर्छिनो नपुंसकानि ५१ ॥ न देवाः ५२ ॥ औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ५३ ॥

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोमहातमः प्रभाभूमयो घनांबुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः १॥ तासु नारकाः २॥ नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ३॥ परस्परोदीरितदुःखाः ४ ॥ संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ५ ॥तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्वानां परा स्थितिः ६॥ जंबूद्वीपलवणादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ७ ॥ द्विर्द्विर्विष्कंभाः पूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ८॥ तन्म

ष्येमेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रवि
ष्कंभो जंबूद्वीपः ए ॥ तत्रभरतहै
मवतहरिविदेहरम्यक् हैरण्यवतैराव
तवर्षाः क्षेत्राणि १० ॥ तद्विभाजिनः
पूर्वापरायताहिमवन्महा हिमवन्निष
धनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः
११ ॥ द्विर्धातकीखंडे १२ ॥पुष्करार्धे
च १३॥प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः१४
॥ आर्याम्लिशश्च १५॥ भरतैरावतवि
देहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकु
रुभ्यः १६ ॥ नृस्थिती परापरे त्रिप
ल्पोपमांतर्मुहूर्ते १७॥ तिर्यग्योनीनां
च १८ ॥ ॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

देवाश्चतुर्निकायाः १॥ तृतीयः पी
तलेश्यः २॥ दशाष्टपंच द्वादशविक-
ल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ३॥ इंद्रसा
मानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्षलो
क पालानीक प्रकीर्णकाभि योग्यकि
ल्विषिकाश्चैकशः ४॥ त्रायस्त्रिंशलोक
पालवर्जा व्यंतरज्योतिष्काः ५॥ पूर्व
योर्द्वींद्राः ६॥ पीतांतलेश्याः ७॥ का
यप्रवीचारा आऐशानात् ८॥ शेषाः
स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराद्वयोर्द्वयो
९॥ परेऽप्रवीचाराः १०॥ भवनवासि
नोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनि

तोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ११ ॥ व्यंत
राः किंनराकिंपुरुषमहोरग गांधर्वयक्ष
राक्षसभूतपिशाचाः १२॥ ज्योतिष्का
सूर्याचंद्रमसोग्रहनक्षत्रप्रकीर्णताराश्च
१३॥ मेरुप्रदक्षिणानित्यगतयो नृलो
के १४॥ तत्कृतः कालविभागः १५ ॥
वहिरवस्थिताः १६॥ वैमानिकाः १७
॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च १८॥
उपर्युपरि १९॥सौधर्मैशानसनत्कुमा
रमाहेंद्रब्रह्मलोकलांतकमहा शुक्रस
हस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयो
र्नवसुग्रैवेयकेषु विजयवैजयंतजयंताप
राजितेषु सर्वार्थसिद्धे च २० ॥ स्थि

तिप्रभावसुखद्यु तिलेश्याविशुद्धींद्रि
यावधिविषयतोऽधिकाः २१ ॥ गतिश
रीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः २२ ॥
उच्छ्वासाहारवेदनोपपातानुभावतश्च
साध्याः २३॥ पीतपद्मशुक्ललेश्याद्वि
त्रिशेषेषु २४॥प्राग्ग्रैवेयकेभ्यःकल्पाः
२५॥ब्रह्मलोकालयालोकांतिकाः२६॥
सारस्वतादित्यवन्ह्यरुणगर्दतोयतुषि
ताव्याबाधमरुतः२७॥ विजयादिषु द्वि
चरमाः २८॥ औपपातिकमनुष्येभ्यः
शेषास्तिर्यग्योनयः २९॥ स्थितिः३०
॥भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्यो
पममध्यर्धम् ३१॥ शेषाणां पादोने३२

॥ असुरेंद्रयोः सागरोपममधिकम् ३२
॥ सौधर्मादिषु यथाक्रमम् ३४॥ साग
रोपमे ३५ ॥ अधिके च ॥ ३६ सप्त
सनत्कुमारे ३७ ॥ विशेषत्रिसप्तदशै
कादशत्रयोदश पंचदशाभिरधिकानि
च ३८ ॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन
नव सुग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थ
सिद्धे च ३ए ॥ अपरापल्योपममधि
कं च ४० ॥ सागरोपमे ४१ ॥ अधि
के च ४२ ॥ परतः परतः पूर्वापूर्वानं
तरा ४३ ॥ नारकाणां च द्वीतीयादि
षु ४४ ॥ दशवर्षसहस्राणि प्रथमा-
याम् ४५ ॥ भवनेषु च ४६ ॥ व्यंत

राणां च ४७ ॥ परापल्योपमम् ४८ ॥ ज्योतिष्काणामधिकम् ४९ ॥ ग्रहाणामेकम् ५० ॥ नक्षत्राणामर्द्धम् ५१ ॥ तारकाणांचतुर्भागः ५२ ॥ जघन्यात्वष्टभागः ५३ ॥ चतुर्भागः शेषाणाम् ५४ ॥

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्ग
लाः १ ॥ द्रव्याणि जीवाश्च २ ॥ नि
त्यावस्थितान्यरूपीणि ३ ॥ रूपिणः
पुद्गलाः ४ ॥ आकाशादेकद्रव्याणि
निष्क्रियाणि च ६ ॥ असंख्येयाः प्र
देशा धर्माधर्मयोः ७ ॥ जीवस्य च
८ ॥ आकाशस्यानंताः९ ॥ संख्येया
संख्येयाश्च पुद्गलानाम् १० ॥ नाणोः
लोकाकाशेऽवगाहः १२ ॥ धर्माधर्म
योः कृत्स्ने १३ ॥ एकप्रदेशादिषु ना
ज्यः पुद्गलानाम् १४ ॥ अ. ९
गादिषु जीवानाम् १५ ॥

ह्यारविसर्गाभ्यां प्रदीपवत् १६ ॥ गतिस्थित्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकारः १७ ॥ आकाशस्यावगाहः १८॥शरीरावाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गलानाम् १९ ॥ सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च २०॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् २१ ॥ वर्त्तनापरिणामः क्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य २२ ॥ स्पर्शरसगंधवर्णवंतः पुद्गलाः २३ ॥ शब्दबंधसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवंतश्च २४ ॥ अणवः स्कंधाश्च २५ ॥ संघातभेदेभ्य उत्पद्यंते २६ ॥ भेदाणुः २७ ॥ भेदसंघाताभ्यां चाक्षुषाः

२८ ॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् २९
॥ तद्भावाव्ययं नित्यम् ३० ॥ अर्पिता
नर्पितसिद्धेः ३१ ॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बंधः
३२॥ न जघन्यगुणानाम् ३३॥ गुण
साम्ये सदृशानाम् ३४॥ द्व्यधिकादि
गुणानां तु ३५॥ बंधे समाधिकौ पा
रिणामिकौ ३६॥ गुणपर्यायवद्द्रव्य
म् ३७॥ कालश्चेत्येके ३८॥ सोऽनंतस
मयः ३९॥ द्रव्याश्रया निर्गुणागुणाः
४०॥ तद्भावः परिणामः ४१ ॥ अना
दिरादिमाँश्च ४२ ॥ रूपिष्वादिमान्
४३ ॥ योगोपयोगौ जीवेषु ४४ ॥

॥ इति पञ्चमोऽध्यायः

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

कायवाङ्मनःकर्म योगः १ ॥ स आश्रवः २ ॥ शुभः पुण्यस्य ३॥ अशुभःपापस्य ॥ (शेषंपापम्) ४॥ सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथयोः ५ ॥ इंद्रियकषायाव्रतक्रियाः पंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ६॥ तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभाववीर्याधिकरणविशेषभ्यस्तद्विशेषः (विशेषात्तद्विशेषः) ७ ॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ८ ॥ आद्यं संरंभसमारंभारंभयोगकृतकारितानुमतिकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ९॥ निर्वर्त्तना

निक्षेपसंयोगनिसर्गाद्विचतुर्द्वित्रिभेदाःपरं १०॥ तत्प्रदोपनिन्हवमात्सर्यांतरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः ११॥ दुःखशोकतापाक्रंदनवधपरिवेदनान्यात्म परोभयस्थान्य सद्वेद्यस्य १२॥ भूतव्रत्यनुकंपादानसरागसंयमादियोगक्षांतिशौचमिति सद्वेद्यस्य १३॥ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य १४॥ कषायोदयात्तीव्रात्म परिणामश्चारित्र मोहस्य १५॥ बह्वारंभपरिग्रहत्वं च न कस्यायुषः १६॥ माया तैर्यग्यो ॥ अल्पारंभपरिग्रहत्वं

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

कायवाङ्मनःकर्म योगः १ ॥ स आश्रवः २ ॥ शुभः पुण्यस्य ३॥ अशुभःपापस्य ॥ (शेषंपापम्) ४॥ सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथयोः ५ ॥ इंद्रियकषायाव्रतक्रियाः पंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ६॥ तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभाववीर्याधिकरणविशेषभ्यस्तद्विशेषः (विशेषात्तद्विशेषः) ७ ॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ८ ॥ आद्यं संरंभसमारंभारंभयोगकृतकारितानुमतिकषायविशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ९॥ निर्वर्त्तना

निक्षेपसंयोगनिसर्गाद्विचतुर्द्वित्रिभे
दाःपरं १०॥ तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यां
तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावर
णयोः ११॥ दुःखशोकतापाक्रंदनवध
परिवेदनान्यात्म परोभयस्थान्य सद्वे
द्यस्य १२॥ भूतव्रत्यनुकंपादानसराग
संयमादियोगक्षांतिशौचमिति सद्वेद्य
स्य १३॥ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्ण
वादो दर्शनमोहस्य १४॥ कषायोद
यात्तीव्रात्म परिणामश्चारित्र मोहस्य
१५॥ बह्वारंभपरिग्रहत्वं च नारक
स्यायुषः १६॥ माया तैर्यग्योनस्य ०
॥ अल्पारंभपरिग्रहत्वं

वार्जवत्वं च मानुषस्य १८ ॥ निःशी
लव्रतत्वं च सर्वेषां १९ ॥ सरागसंय
मसंयमासंयमाकामनिर्जरा बालतपां
सि देवस्य२०॥ योगवक्रताविसंवादनं
चाशुभस्य नाम्नः २१॥ विपरीतं शु
भस्य २२॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसंपन्न
ताशीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णं ज्ञा
नोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी
संघसाधुसमाधिवैयावृत्यकरणमर्हदा
चार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकाप
रिहाणिमार्गप्रभावना प्रवचनवत्सल
त्वमितितीर्थकृत्त्वस्य २३॥ परात्मनिं
दाप्रशंसेसदसद्गुणाछादनोभावने च

प्रमत्तयोगोत्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ८
असदभिधानमनृतम् ९ ॥ अदत्तादा
नं स्तेयम् १०॥ मैथुनमब्रह्म ११ ॥ मू
र्छा परिग्रहः १२॥ निःशल्यो व्रती १३
॥ अगार्यनगारश्च १४ ॥ अणुव्रतोऽगा
री १५ ॥ दिग्देशानर्थदंडविरतिसा-
मायिकपौषधोपवासोपभोगपरिभोग
परिमाणातिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च
१६ ॥ मारणांतिकीं संलेखनां जोषि
ता १७ ॥ शंकाकांक्षाविचिकित्सान्य
दृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टे रति
चाराः १८॥ व्रतशीलेषु पंच पंच य-
थाक्रमम् १९ ॥ बंधवधच्छविछेदाति

ज्ञारारोपणान्नपाननिरोधाः २० ॥मि
थ्योपदेशरहस्याभ्याख्यान कूटलेख
क्रियान्यासापहार साकारमंत्र भेदाः
२१ ॥ स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरु-
द्धराज्यातिक्रमहीना धिकमानोन्मा
नप्रतिरूपकव्यवहाराः २२ ॥ परवि-
वाहकरणेत्वर परिगृहीता गमनानंग
क्रीडातीव्रकामाभिनिवेशाः २३ ॥ क्षे
त्रवास्तुहिरण्यसुवर्ण धनधान्यदासी
दासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः२४ ॥ उर्ध्वा
धस्तिर्यग्व्यतिक्रमः क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यं
तर्धानानि २५ ॥ आनयनप्रेष्यप्रयोग
शब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः २६॥ कं

दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकर-णोपभोगाधिकत्वानि २७ ॥ योगदुः प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि २८ ॥ अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि २९ ॥ सचित्तसंबद्धसंमिश्राभिषवदुःपक्काहाराः ३०॥ सचित्तनिक्षेपपिधानपरव्यपदेश मात्सर्यकालातिक्रमाः ३१॥ जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानकरणानि ३२॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ३३ ॥ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ३४ ॥

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषा
ययोगा बंधहेतवः १ ॥ सकषायत्वा
जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते
२ ॥सबंधः ३ ॥ प्रकृतिस्थित्यनुभाव
प्रदेशास्तद्विधयः ४ ॥ आद्यो ज्ञानद-
र्शनावरणवेदनीय मोहनीयायुष्कना
मगोत्रांतरायाः५॥ पंच नवद्व्यष्टावि
शति चतुर्द्विचत्वारिंशद्द्वि पंचभेदा
यथाक्रमम् ६॥ मत्यादीनां ७॥ चक्षुर
चक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्रा
प्रचलाप्रचला प्र ८ ८ ५
श्चवेदनीयानिच ८॥ सदसद्वेद्ये ९

नचारित्रमोहनीयषायनोकषायवेदक
नीयाख्यास्त्रिद्विषोडशनवभेदाःसम्य
क्त्व मिथ्यात्वतदुभयानि कषायनो
कषाया वनंतानुबंध्य प्रत्याख्यान प्र-
त्याख्याना वरण संज्वलन विकल्पा
श्चैकशः क्रोध मान माया लोभाः हा
स्य रत्यरति शोक भय जुगुप्सास्त्री
पुंनपुंसकवेदाः १० ॥ नारक तैर्यग्यो
नमानुषदैवानि ११ ॥ गतिजातिशरी
रागोपांगनिर्माणबंधनसंघात संस्था-
नसंहनन स्पर्शरसगंधवर्णानुपूर्व्यगु-
रुल घूपघातपराघाता तपोद्योतोच्छ्वा-
सविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रस सु
भगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेय

यशांसिसेतराणितीर्थंकरत्वंचेति १२॥ उच्चैर्नीचैश्च १३ ॥ दानादीनामंतरायः १४ ॥ आदितस्तिसृणां (अंतरायस्य) च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोटयः परा स्थितिः १५ ॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य १६ ॥ नामगोत्रयोर्विंशतिः १७ ॥ त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाण्या युष्कस्य (त्रयस्त्रिंशत्सागराण्यधिकान्यायुष्कस्य) १८ ॥ अपराद्वादशमुहूर्त्तावेदनीयस्य १९॥ नामगोत्रयोरष्टौ २०॥ शेषाणामंतर्मुहूर्त्तम् २१॥ विपाकोऽनुभावः २२ ॥ स यथा नाम २३॥ ततश्च निर्जरा २४॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो

योगविशेषात्सूक्ष्मैक क्षेत्रावगाढस्थि
ताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनंतानंत प्रदेशाः
२५॥ सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवे
दशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् २६ ॥

॥ इति अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

आश्रवनिरोधः संवरः १ ॥ सगु
प्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरिषहजय चा
रित्रः २ ॥ तपसा निर्जरा च ३ ॥ स
म्यग्योगनिग्रहो गुप्ति ४ ॥ ईर्याभाषै
षणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ५
॥उत्तमःक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसं
यमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि ध

र्मः ६ ॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्य
शुचित्वाश्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदु
र्लभधर्मस्वतत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ७॥
मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः प
रिषहाः ८ ॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंश
मशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्या निषद्याश
याक्रोशवधयाचनालाभरोगतृण स्प-
र्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञान दर्श
नानि ९॥ सूक्ष्मसंपरायछद्मस्थवीत
रागयोश्चतुर्दश १० ॥ एकादश जिने
११ ॥ बादरसंपराये सर्वे १
वरणे प्रज्ञाज्ञाने १३.॥
राययोरदर्शनालाभौ

ह्नेनाग्न्यारतिस्त्री निषद्याक्रोशयाचना
सत्कारपुरस्कारा: १५ ॥ वेदनीये शे
षाः १६ ॥ एकादयो भाज्या युगपदे
कोनविंशतेः १७॥ सामायिकछेदोस्था
प्यपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसंपराययथा
ख्यातानि चारित्रम् १८ ॥ अनशना
वमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्याग
विविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यंतपः
१९ ॥ प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वा-
ध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् २० ॥ न
वचतुर्दशपंचद्विभेद यथाक्रमं प्रा-
ग्ध्यानात् २१ ॥ आलोचनप्रतिक्रमण
यविवेकव्युत्सर्ग तपश्छेद परि-

हारोपस्थापनानि २२ ॥ ज्ञानदर्शन
चारित्रोपचाराः २३ ॥ आचार्योपाध्या
यतपस्विशिक्षकग्लानकुलगणसंघसा
धुमनोज्ञानाम् २४॥ वाचनापृच्छनानु
प्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः २५ ॥ बाह्या-
भ्यंतरोपध्योः २६ ॥उत्तमसंहननस्यै
काग्रचिंतानिरोधश्चध्यानम् २७ ॥आ
मुहूर्तात् २८॥ आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि
२९ ॥ परे मोक्षहेतू ३० ॥ आर्त्तमम
नोज्ञानां संप्रयोगे तद्विप्रयोगायस्मृ-
तिसमन्वाहारः ३१॥ वेदनायाश्च ३२
॥विपरीतं मनोज्ञानाम् ३३॥ निदां
च कामोपहतचित्तानां पुनः ३

दविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ३५ ॥ हिंसानृतस्तेय विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेश विरतयोः ३६ ॥ आज्ञापायविपाकसंस्थान विचयाय धर्म्यम प्रमत्तसंयतस्य ३७ ॥ उपशांतक्षीण कषाययोश्च ३८ ॥ शुक्ले चाद्ये ३९ ॥ (शुक्लेचाद्ये पूर्वविदः ए. ३९ ॥) पूर्वविदः ४०॥ परे केवलिनः ४१॥ पृथक्त्ववितर्कैकत्वसूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति व्युपरतक्रियानिवृत्तीनि ४२ ॥ तत्त्रयेककाययोगायोगानाम् ४३ ॥ एकाश्रयेसवितर्के पूर्वे ४४ ॥ अविचारं द्वि-तीयम् ४५ ॥ वितर्कःश्रुतम् ४६॥ वि

चारोऽर्थव्यंजनयोर्योगसंक्रांतिः ४७॥
सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजक
दर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशांतमोह
क्षपकक्षीण मोहजिनाः क्रमशोऽसं
ख्येयगुणनिर्जराः ४८॥पुलाकबकुश
कुशीलनिर्ग्रंथस्नातका निर्ग्रंथाः ४९
संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंग लेश्या
पपातस्थानविकल्पतः साध्याः ५०॥

॥ इति नवमोऽध्यायः ॥

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शना वरणांत
रायक्षयाच्च केवलम् १॥ बंधहेत्वभाव
निर्जराभ्याम् २॥कृत्स्नकर्मक्षयो

क्षः ३ ॥ औपशमिकादि भव्यत्वानां चान्यत्रकेवलसम्यक्त्वज्ञान दर्शन सिद्धत्वेभ्यः ४ ॥ तदनंतरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकांतात् ५ ॥ पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बंधच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च तद्गतिः ६ ॥ क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ७ ॥

॥ इति दशमोऽध्यायः ॥